ओम

वेद में 'हरियुपीया' शब्द का वास्तविक तात्पर्य

'हरियुपीया' शब्द से पाश्चात्य और उनके चरण चिन्हों पर चलने वाले भारतीय विद्वान इसे 'रूढि, शब्द मानकर नाना प्रकार की कल्पना करते हैं जबकि वेदों में रूढी नहीं वरन् 'यौगिक' शब्द हैं वेदों में काई भी अनित्य इतिहास नहीं है।

'हरियूपीया' शब्द पर पाश्चात्य विद्वानों की कल्पना :-

'हरियूपीया' का ऋग्वेद (६.२७.५) के एक सूक्त में उस स्थान के रूप में उल्लेख है जहाँ 'अभ्यावर्तिन चायमन' ने 'वृचीवन्तो' को पराजित किया था। यह या तो किसी स्थान अथवा नदी का दयोतक हो सकता है, क्योंकि ऐसा प्रतीत होता है कि अनेक युद्ध नदियों के तट पर लड़े गये थे। लुडविग (ऋग्वेद का अनुवाद ३,१५८) ने इसे यथावती के तट पर बसे उस नगर के नाम के रूप में ग्रहण किया है जिसके साथ सायण ने इस स्थल के अपने भाष्य में इस समीकृत किया है। डिलेब्रान्ट (विदेशे माइथौलोजी, ३,२६८, नीट १) का विचार है कि यह क्रुम की सहायक 'इर्याव' (हलियाव) नदी है, किन्तु ऐसा कदापि संभव नहीं।

डॉ. सूर्यकान्त शास्त्री एम्.ए., पी.एच.डी. विद्याभास्कर, व्याकरण ने ''वैदिक कोष'' २ में 'वैदिक इण्डेक्स' की सत्य प्रतिलिपि की है। शास्त्रीजीने 'वैदिक इण्डेक्स' का ही प्रायः अनुवाद करके ''वैदिक कोष २'' लिखा है। सर्वश्री मैकडोनेल व कीथ के ही सिद्धान्तों को ज्यों का त्यों मान लिया है।

पं. गिरीशचन्द अवस्थी व्याकरणाचार्य :- प्रधानाध्यापक, संस्कृत प्राच्य विभाग, लखनऊ-विश्वविद्यालय, लखनऊ में 'वेद घरातल' नामक एक विशाल ग्रन्थ लिखा है। आपने भी पाचशात्यों व अन्य प्राच्य विद्वानों के लेखों के आधार पर वेदों में भूगोल व इतिहास माना है।

तु की टिसमर के आल्टिन्डिथे लेबेन, १८, १९, केगी : ऋग्वेद, नोट ३२८

१. ''वैदिक इण्डेक्स'' भाग २ पृष्ठ ५५२ (मूललेखक श्री. ए.ए. मैकडोनेल एम्.ए. पी.एच. डी. श्री. ए.बी. कीथ एम्.ए. डी.सी.एल., अनुवादक श्री. राम कुमार राय एम.एम.ए., एल्.एल्.बी. संवत् २०१९ वि. सन् १९६२ ई.में. चौखम्बा विद्याभवन, चौक, वाराणसी-१ द्वारा प्रकाशित, प्रथम संस्करण)

२. ''वैदिक कोष'' पृष्ठ ५९० (सन् १९६३ ई.में. वैदिक रिसर्च समिति, बनारस हिन्दू युनिवर्सिटी, वाराणसी द्वारा प्रकाशित)

अवस्थीजी ने प्रारम्भ में ''वैदिक इण्डेक्स'' के मत को लिखा है पुनः आप लिखते है, ...पू. भारतीय अनुशीलन 'पृष्ठ ३७' ऋग्वेद की दान स्तुतियों में ऐतिहासिक उपादान 'नाम के लेख में डॉ. मणिलाल पटेल पी.एच.डी. (मारगर्क) ने विश्वभारती शान्ति निकेतन में अभ्यावर्ती का वर्णन करते हुए कहा है-'हरियूपीया और यथाव्यती के किनारे यह युद्ध हुआ।' डिल्लेब्रान्ट कहते हैं (लीदेह देस् ऋग्वेद

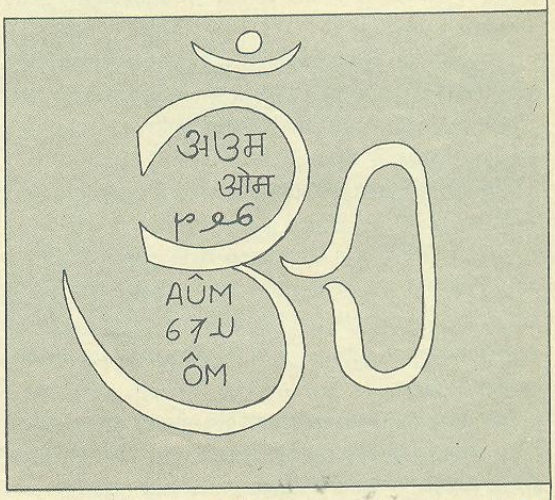

गोटिंगेन, १९१३ पृष्ठ ४९) कि हरियूपीया नदी आधुनिक अरिओब याहलिआब नदी है, जो कि कुरूम् प्रान्त की नदियों में से एक है। (यह स्थान प्रार्थव प्रदेश में नहीं है, जैसा कि ब्रुनहाफर कहते हैं। यह ठीक है कि ब्रूनहाफर ने ही हरियूपीया को अरिओब पहले-पहले बतलाया था, मगर उनका बतलाया स्थान ठीक नहीं था)। यव्यायती भी उससे बहुत दूर नहीं होगी।

६. ब्रूनहाफर के मत में अरिओब नदी हरियूपीया है। (भारतीय अनुशीलन)

वस्तुतः हरियूपीया का नाम ऋग्वेद ६/१७/५ में आया है। बृहद्देवता ५।१२१ में हर्य्युपीया पाठ आया है और इसको नदी माना है। सायणाचार्य इसे नदी या नगरी दोनों होने का संभव मानते हैं। इन्द्र ने उसके तट पर चायमान अध्यावर्ती के लिये वरशिख के पुत्रों को मारा। इसका दूसरा नाम यव्यावती भी था। इसी यव्यावती के तट पर चायमान अभ्यावर्ती का यज्ञ हुआ था। ऋग्वेद में चायमान अभ्यावर्ती का 'सम्राट' विशेषण इस राजा को ऐन्द्राभिषेक से अभिषिक्त पूर्व देश का राजा कह रहा है। पूर्व देश का राजा कुरूमाप्राप्त में जाकर यज्ञ करें, यह सम्भव नहीं। यदि हरियूपीया गंगा और सरस्वती के समान यज्ञ के लिये प्रतिष्ठित होती, तो यज्ञ करने के लिए जाना संभव भी था। परन्तु संस्कृत वाङ्मय मात्र में हरियूपीया या यव्यावती के इतने पवित्र होने में कोई प्रमाण नहीं है। इसलिए हरियूपीया या अव्यावती नदी पूर्व देश में कहीं पर होनी चाहिये। ऐतरेय ब्राम्हण ३८/३ 'ऐन्द्राभिषेक से अभिषिक्त पूर्व देश के राजा की पदवी' सम्राट होती थी, यह स्पष्ट है। ऋग्वेद ६/२७/८ में चायमान अभ्यावती की पदवी 'सम्राट' लिखी है इससे यह पूर्वदेश का राजा था, इसमें अणुमान्त्र भी सन्देश नहीं हैं। ऋग्वेद में इस प्रकार

वर्णन मिलता है । ६/३७/४ यह मंत्र इन्द्र स्तुति में आया है । इसके भरद्वाज ऋषि हैं । अर्थ यह है-'हे इन्द्र । जिस वीर्य से आपने वरशिख (असुर) के पुत्रों को मारा जिस बल से चलाये गये वज्र के शब्द से ही वरशिख का सब से बलिष्ठ पुत्र कट गया, हमने आपके इस बल को जाना । "ऋग्वेद ६/२७/५ मे चायमान के पुत्र अभ्यावर्ती को धन देते हुए इन्द्र ने वरशिख के पुत्रों को मारा किस प्रकार मारा जब इस इन्द्र ने हरियूपीया के पूर्व भाग में स्थित वृचीवन्तो (वरशिख के पूर्वज का नाम वृचीवत् था, उसकी सन्तान वृचीवन्त) वरशिख के पुत्रों को मारा तब वरशिख का दूसरा पुत्र जो हरियूपीया के दूसरे भाग में स्थित था, विदीर्ण हो गया । "ऋग्वेद ६/२७/९ का अर्थ है । 'हे इन्द्र अन्न अथवा यश की कामनावाले १३० कवचधारी यज्ञ पात्रों को नष्ट करते हुए वृचीवन्तों ने आपको मारने की इच्छा से यव्यावती में आपके ऊपर धावा किया और मारे गये । "ऋग्वेद ६/२७/७ का अर्थ है : "गति विशेष से चलनेवाले इन्द्र के घोडे अन्तरिक्ष में चलते हैं । वृचीवन्तों का धन दैववात (दैववात के वंशोत्पन्न) अभ्यावर्ती को इप्सित देते हुए उस इन्द्र ने सृज्जय नामक राजा के लिये तुर्वभ नामक राजा को दिया ।" ऋग्वेद के ६।२७।८ मे अभ्यावर्ती चायमान का 'सम्राट' विशेषण लिखा है । इससे यह पूर्व देशका राजा था, इसमें सन्देह नहीं । यव्यावती और हरियूपीया, दोनों ही एक हैं क्योकि यव्यावती में अभ्यावर्ती के यज्ञ में चायमान के पुत्रों का इन्द्र के मारने के लिए धावा करने का वर्णन है । यज्ञ के पात्रों को भंग करना वृचीवन्तो का इन्द्रशत्रु और यज्ञ विध्वंसक असुर होना सिद्ध कर रहा है और वृचीवन्तो का इन्द्र द्वारा हरियूपीया के पूर्व पर भाग में मारा जाना दोनों नाम एक ही के हैं, यह सिद्ध कर रहा है । हिल्लेब्रान्ट अभ्यावर्ती को ईरान में मानते है । वह ऐतरेय के प्रमाण से खण्डित हो जाता है ।"३

पं. रामगोविन्द त्रिवेणी 'वेदान्त शास्त्री (ऋग्वेद के हिन्दी भाषान्तरकार) लिखते है :-

"३८ हरियूपीया-ऋग्वेद (६.२७.५) में इसका नाम आया है । कहा गया है कि 'इन्द्र ने चायमान राजा के अभ्यवर्ती नामक पुत्र को धन देने के लिए वरशिख के पुत्रों और वरशिख के गोत्रोत्पन्न वृचीवात् के पुत्रों को मार डाला था । "ऋग्वेद के जर्मन अनुवादक लुडविग ने लिखा है कि हरियूपीया नगरी का नाम है । सायण के मत से यव्यावती और हरियूपीया एक ही नदी का नाम है । हिलेबाण्टड (हिलेब्रान्त) के मत से यह कुर्रम की सहायक नदी इर्याब या इलियाब है । कुछ लोग कहते है कि यह हिरात (अफगाणिस्तान) की हरीरूद नदी है । हापकिस के मत से यह सरयू का नाम है । इस तरह यहाँ मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिना है की उक्ति खूब चरितार्थ हो रही है ।"[४]

३. "वेद घरातल" पृष्ठ ७७६ से ७७९ तक (संवत २०१० वि.में. 'वाङमय-बिहार-प्रकाशन' बाबूगंज लखनऊ द्वारा प्रकाशित, प्रथमावृत्ति)

४. "वैदिक साहित्य" पृष्ठ ३५४ (सन १९६८ ई मे 'भारतीय ज्ञानपीठ' प्रकाशन, प्रकाशन कार्यालय, दुर्गा कुंड मार्ग, वाराणसी-५ द्वारा प्रकाशित, द्वितीय संस्करण)

श्री. अविनाश चन्द्रदास एम.ए., पी.एच.डी. कलकत्ता विश्वविद्यालय कलकत्ता भी लिखते हैं ।

"The word Hariyupiya occurs in a Rugvedic Verse (RV VI27.5), which is indentified with Europe. But it is probably the name of a river or town, as Sayana says, and it is related that Indra killed the sons of Vreivat. (who was himself the son of Varashikha, who were encamped on the eastern side of Hariyupiya and that Vreivat's eldest son, who was encamped on the western side seeing his brothers killed died through fear. This expendition, therefore, was also a war of conquest, and Hariyupiya does not seem to us to the name of the continent of Europe. But even if it was, it only goes to show that the ancient Aryans of Rugvedic times advanced from Sapta Sindu as far as Europe in their war like expenditions".)

अर्थः- ६ हरियूपीया शब्द ऋग्वैदिक मंत्र (ऋ.६.२७.५) में घटित होता है जो युरोप के साथ एक नया परिच्छेद आरम्भ किया है । परन्तु जैसा सायण कहता है कि यह प्रायः एक नदी या नगर का नाम है और यह वृचीवत (जो स्वयं वरशिष का पुत्र था) के पुत्रोंकी इन्द्र द्वारा हत्या से सम्बन्धित है जो हरियूपीया के पूर्वीय पार्श्व पर पडाव डाला था । और वृचीवत के सबसे बड़े पुत्र अपने भ्राताओं के मारे जाने को देखकर पश्चिमीय पार्श्व पर पड़ाव डाला था और भय से मर गया । अतएव यह साहसिक यात्रा विजय का युद्ध भी था और हरियूपीया यूरोप के महाद्वीप के नाम में हम लोगों को प्रकट नहीं होता है । परन्तु यदि यह था तो ऋग्वैदिक काल के प्राचीन आर्योंका सप्त सिन्धु से अग्रिम बढना प्रदर्शित करता है यदि यूरोप में उनकी युद्ध संबधी साहसिक यात्राओं में है ।

५. Rugvedic India P.P.343-344 (सन १९७१ ई.में मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली ७ द्वारा प्रकाशित, तृतीय संशोधित संस्करण)

समीक्षाः जब वेदों में कोई अनित्य इतिहास नहीं है वेदों के सभी शब्द यौगिक हैं तब 'हरियूपीया' का अर्थ नदी या नगर कैसे माना जाय ? सर्व प्रथम यह श्री. सायाणाचार्य की भूल थी जिनके भाष्य की प्रतिलिपि सभी पाश्चात्य व भारतीय विद्वानों ने की ।

लौकिक और वैदिक शब्दों के अर्थ में भेद होता है । लौकिक व वैदिक शब्दों का भेद महाभाष्यकार श्री. पतन्जली मुनी ने महाभाष्य के आरम्भ में दर्शाया है कि "केषां शब्दनामनि लौकिकानां वैदिकाना च" (महाभाष्य पस्पशाहिक) आगे "नैगमरूढि भवंहि सुसाधु । नैगमाश्च रूढिभवश्च" (महाभाष्य अ.३/३/१) यह कह कर लौकिक और वैदिक शब्द भिन्न है । यह बतलाया, तथा नैगम अर्थात वेद के शब्द रूढि नहीं होते, यह भी दर्शाया ।

इस भेद को न समझ कर बहुत से आर्षग्रन्थों की परिपाटी न समझने वालों को भ्रम होता है । वैदिक निघण्टु 'में' अहि' -**मेघ** को परन्तु लौकिक-कोषों में 'अहि' % साँप को कहते है । वैदिक निघण्टु में 'पुरीघ-जल को, परन्तु लौकिक कोषों में 'पुरीघ-मल, विष्ठा' को कहते हैं । निघण्टु में वेन, उशिक्, कण्व, गृत्स आदि जो लोक में संज्ञावाची शब्द हैं, दूनको 'मेघावी' नामों में पढा है । जो व्यक्ति वेद के शब्दों के अर्थ इन लौकिक कोषों के आधार पर समझेंगे, उन्हें वेद का अर्थ कभी भी समझ में नहीं आ सकता ।

उपर्युक्त विद्वानों ने 'वैदिक शब्द 'हरियूपीया' का अर्थ लौकिक समझ कर नदी या नगर कर दिया ।

याक (निरूक्त १/१२ में) ने यह कहा कि जिस नाम में स्वर और धातु प्रत्ययादि संस्कार उत्पन्न हों । व्याकरण शास्त्र की प्रक्रिया से अनुगत हैं । वह नाम **'आख्यातज'** है । यही बात श्री पतन्जलि ने

''उणादमो बहुलम् '' (पा. ३.३.१) सूत्र पर ''नाम च धातुजमाह निरूवते व्याकरणे शकटस्म च तौकम्'' % सब निरूक्तकार और वैयाकरणों में शकटायन सब नामों को धातुज (यौगिक) कहता है, अर्थात् 'सब नाम प्रकृति प्रत्ययार्थ के सम्बन्ध से यौगिक अथवा योगरूढ होते हैं, रूढि, अर्थात् अत्युत्पन्न शब्द कोई नहीं । जिस शब्द का प्रकृति प्रत्यय कुछ नहीं बतलाया गया, वहाँ यदि जान पड़े तो धातु की कल्पना, और धातु जान पड़े तो प्रत्यय की कल्पना कर लेनी चाहिए । इस प्रकार उन शब्दों का अर्थज्ञान कर लेना चाहिए ।

यास्क और पतन्जलि यौगिकवाद के परम प्रतिवादक हैं ।

महाभाष्यकार ने ''भोगे :' का शरीरे : (अ. ५।१।९ में) सप्त सिन्थव :' का 'सप्तविभक्तयः' तथा 'सखाय का'वैयाकरणा :' अर्थ किया है यह बिना यौगिकवाद के कैसे हो सकता है ?

श्रीसायणाचार्य के पूर्ववर्त्ती वेदभाष्यकार और यौगिकवाद-

श्री दुर्गाचार्य निरूक्त टीका-प्राज्ञचात्मा : परमात्मा/वरूण : % आदित्य, विद्युत ।

सुपर्ण : % अग्नि :। सोम : % दुग्धम्। रश्यम : % स्त्रिय :, बहुप्रज्ञाना :। आप : % वाणी ।''

श्री भट्टभास्कर-तैतिरीय संहिता भाष्य-''गावो % गन्तारोजन : ।

यज्ञं % परमात्मनंविष्णुम् ।

श्री उव्वटाचार्य-यजुर्वेदभाष्य में-पिता % पाता (यजु. २/११)-इन्द्र : % यजमान : (यजु ४/२७),

श्री महीधराचार्य-यजुर्वेद भाष्य में''-सवितु : % परमेश्वरस्य (यजु. १०/८) ।

इन्द्र : % आत्मा (यजु. ६/२०) ।

श्री. आत्मानन्दजी-'अस्यवामीय (ऋ. १/१६४) सूक्त भाष्य में-

पुत्रा : % अवयावा : अंशा : । अग्ने % अग्रणी : परमात्मा । सूर्य % परमात्मा । सोम : % जगदीश्वर : ।

स्वसार : % ज्ञानेन्द्रियाणि । अश्विम्याम् % गुरूभिष्याम्याम् ।''

इसी प्रकार महर्षि दयानन्दजी सरस्वती ने अपने वेदभाष्य में ''यौगिकवाद'' का प्रयोग किया है ।

जब ऋग्वेद ६/२७/५ में आये 'हरियूपीया' का यौगिक अर्थ देखिए-

हरियूपीया- (हरियु-पीयापदमो : समास : पूर्व दीर्घ : ।हरियुः हरिपदादिच्छायां वयजन्तात्

ताच्छीत्य उ : । पीया % पीड् पाने (दिवा) (धातो बाहु औणाण्यक् । तत : स्त्रियां टाप्)

ऋग्वेद मण्डल ६ सुक्त २७ मंत्र ५ का सत्यार्थ

''वधीदिन्द्रो वरिशिखस्य शेषो म्यावर्तिने चायमानाय शिक्षन् ।

वृचीवतो यद्धरियू पीयायां हन् पूर्वे अर्धे भिय सापये दर्त ।।''

महर्षि दयानन्दजी सरंस्वती का भाष्य :/- (वध्वीत्) हन्यात् (इन्द्र) (वरनिखस्य) वरा शिखास्य तद्वत मेघस्य (शेषः) य भिष्यते (अभ्यावर्तिने) अभ्यावर्तितुं शीलं यस्य तस्मै (चायमानाय) सत्कर्ते (शिक्षन्) विद्यां दादन् (वृचीवत :) वृचिरविद्याछेदने । प्रशस्तं यस्य तस्य (यत्) य : (हरियूपीयायाम्) हरीन् मुनीनिच्छतां पीयायां पान क्रियायाम् (हन्) हन्तिं (पूर्वे) सम्मुखे (अद्धर्दे) (भियस्त) भयेन (अपर :) (दर्त्) हणाति ।

पदार्थ :- हे मनुष्यो (यत्) जो (शेष :) अवशिष्ट (इन्द्र :) सूर्य (वृचीवत) अविद्या का छेदन प्रशंसित जिसके उस (वर शिखस्य) श्रेष्ठ शिखावाले के समान मेघ के (अभ्याव-र्तिने) चरेरां ओर घुमनेवाले के लिये जैसे वैसे (चायमानाय) सतकर करनेवाले के लिये (शिवान्) विद्या देता हुआ (भियसा) भय से (हरीयूपीयायाम्) विचारशील मनुष्यों को इच्छा करते हुओं की पान क्रिया में (पूर्वे) सन्मुख (अर्धे) अर्ध्दभाग में (हन्) नाश करता वा (वधीत्) नाश करे (अपर :) अन्य बिजुली रूप अग्नि उसको (दर्त्) विदीर्ण करता है वैसे वर्तमान उपदेशक का हमलोग सत्कार करें ।८

चतुर्वेद भाष्यकार पं. जयदेव शर्मा विद्यालंकार मीमांसातीर्थ :-

''मा. जब (हरि-यूपीयायाम्) वह मनुष्यों को गुणों से मुग्ध करनेवाली द्विया के निमित्त (पूर्वे अर्धे) पूर्व के उत्तम कालमें (अपरः) दूसरा भी (भियसा दर्त्) भय से भीत हो, इस प्रकार से वह (वृचीवत :) अज्ञाननामक विद्यावाले शिष्यों को (हन्) ताडना करे तब (वर-शिखस्य) उ-तम, शिखा धारण करनेवाले (वृचीवत :) अविद्या के छेदने करनेवाली उत्तम इच्छा से युक्त विद्यार्थी का (शेष :) शासन करने हारा (इन्द्र) उत्तम आधम्य (चायमानाय) सत्कार करनेवाले (अभ्यावर्तिने) समीप रहनेवाले अन्तेवासी शिष्य को (शिक्षन्) शिक्षा देता हुआ (वधीत्) दण्ड भी दे, उसकी यथोचित् ताडना भी करें ।

६. ऋग्वेद भाष्यम् ''(अष्टम भागात्मकम्) पृष्ठ ३३१-३३२ (संवत् १९८३ वि. में वैदिक मन्त्रालय अजमेर द्वारा मुद्रित)

(२) इसी प्रकार (हरियू-पीपायाम्) मनुष्यों के स्वामी राजा की पालन करनेवाली नीति में लगे (वृचीवत :) प्रजा के उच्छेद करनेवाली शक्ति से युक्त दुष्ट पुरूषों को राजा (पूर्वे अर्धे) अपने समृद्ध शासन के पूर्वकाल में ही (अपर :) उत्तम राजा (भियसा) भयजनक उपाय से (हन्) उनको ताड़ना करे और (दर्त्) भयभीत करे । (वर-शिखस्य अभ्यावर्तिने चायमानाय शिक्षन्) समपि प्राप्त अनुकूल अपने सत्कार करनेवाले प्रजानन के हितार्थ उसको (वर शिखस्थ शेष इन शिक्षन्) उत्तम शिखा या तुर्रे वाले प्रमुख नायक के पुत्रवत् सद्-व्यवहार की शिक्षा देता हुआ (इन्द्र) राजा (वधीत्) दण्डित किया करे । अर्थात् राजा प्रजानन को पुत्रवत् प्रेम करता हुआ भी हित से ही उनको दण्डित करे ।।७

वेदअनुसन्यानकर्ता आचार्य पं. वैद्यनाथजी शास्त्री 'वर शिख' पर लिखते है- ''इण्डेक्स मानती है कि यह एक नेता का नाम है जिसकी जाति ऋग्वेद में अभ्यावर्तिन् चायमान के द्वारा पराजित की गयी वर्णित है ।

यहाँ पर भी इण्डेक्स का वर्णन विपरीत है । ऋग्वेद ६/२७/४-५ मन्त्रों में वरशिख पद आया है । परन्तु वहाँ पर इन्द्र के द्वारा इसका वध लिखा है । अभ्यावर्तिन् चायमान के द्वारा नहीं । इण्डेक्स का वक्तव्य त्रुटिपूर्ण है । वरा शिखा यस्य स : वरशिखो मघः अर्थात् श्रेष्ठ शिखा है जिसकी वह परशिख है और वह मेघ है । अथवा 'वरा : शिख : ज्वाला : यस्य स वरशिखो ग्नि : 'अर्थात् श्रेष्ठ शिखा % ज्वालायें हैं जिसकी वह अग्नि ही वरशिख है । वरशिख का पुत्र मे है क्योंकि आदित्यस्य अग्नि से ही मेघ को जन्म दिया जाता है । इन ऋग्वेदीय मंत्रों में क्रमश : ''हरियूपीयायाम्'' और यथाव्यतमाम् पद आये हैं । इनका अर्थ नदी अथवा नगरी करना अनुपयुक्त है । ये न तो नदी है और न कोई नगरी हैं । सायण ने ऐसा अर्थ करके वेदार्थ को स्पष्ट करने में असमर्थता का प्रदर्शन मात्र किया है । यदि

(शेष पृष्ठ २९ पर)

(पृष्ठ २६ का शेष)

''हरियूपीया'' कोई नदी अथवा नगरी है तो फिर उसे छठे मंत्र में ''यव्यावती'' कैसे कहा जाता ? हरि शब्द का अर्थ किरणें एवं अर्चि हैं । हरणशील होने से सूर्य की रश्मियां हरि हैं । यास्क ने निरूक्त ८/२४ पर ''हरय :'' का अर्थ ''हरणा :'' किया है और ''पतना :'' का विशेषण माना है । ऋग्वेद ६/४७/१८ में ''युक्ता हयस्प हरय : शता दश ''पाठ आया है । इसका अर्थ करते हुए जैमनिय उपनिषद् १/४४/५ में लिखा है कि 'सहस्त्रं हैत आदित्यस्य रश्मय :। तेऽस्य युक्तास्तै रिदं सर्वं हरति । तद्ययेतैरिदं सर्व हरति । तस्माध्दरय : 'अर्थात् सूर्य की सहस्त्र किरणें हैं । (वे इससे युक्त हैं और इन्हीं से वह जल आदि का हरण करता है । चूंकि इनके द्वारा वह हरण करता है अत : ये हरि हैं । इस प्रकार ''इरय : यूपा : इव स्वरयां क्रियाधाम् सा हरियूपीया तस्याम् ।'' अर्थात् किरणें यूप के समान जिस क्रिया में हों हरियूपीया कहते हैं । आन्तरिक्ष में मेघ के वध के समय में जो क्रिया किरणें किया करती हैं उसका नाम हरियूपीया है । इसी प्रकार मिश्रणामिश्रण एवं गुत्थमुगुत्थ संघर्ष के कारण उसे ही यव्यावती कहा जाता है । मेघ की मार कर वर्षा करने में आकाश में यह क्रिया होती है । यह प्रक्रिया विशेष में अर्थ है । प्रक्रियान्तर में अर्थान्तर भी हो सकता है ।''८ अत : 'हरियूपीया' का अर्थ जो लोग नदी या नगर करते है वे भ्रम में है ।

(७) ''ऋग्वेद संहिता भाषा भाष्य (चतुर्थ खंड) पृष्ठ ३२१-३२२ (संवत् १९९१ वि. मे आर्य साहित्य मण्डल लि. अजमेर द्वारा प्रकाशित, प्रथमावृत्ती)

(८) ''वैदिक-इतिहास'' पृष्ठ २७५ (जुन १९६१ में आर्य साहित्य मण्डल लि. अजमेर द्वारा प्रकाशित, प्रथमावृत्ती)

लेखक- डॉ. शिव पूजन सिंह कुमवाह शास्त्री,
एम्.ए. वेद मंदीर (गीताआश्रम)
ज्वालापुर- २४८४०७
जनपद : सहारनपुर (उत्तरप्रदेश)